हमारी बात

'सबला' के सभी पाठकों को नये वर्ष की शुभकामनाएं। जिस हालात में नया साल आया है उसमें तो कोई खुशी नहीं है। चारों ओर डर और दुख का माहौल है। लेकिन इस माहौल को अपनी क़िस्मत मान लेना, इस डर, दुख, बंटवारे के अंधियारों में जीते रहना भी तो ठीक नहीं है। हमारी कामना है कि हम सब जो कुछ हम से हो सकता है करें, देश की एकता, देश की विविधता बनाए रखने को। यह देश तभी बचेगा जब यहां हर धर्म को मानने वाले, हर जाति के लोग, हर भाषा बोलने वाले स्त्री और पुरुष सभी इज्ज़त से जी सकेंगे। हम यह कामना करते हैं कि 1993 में झगड़े कम होंगे और सदभावना बढ़ेगी।

नये साल में हम महिला शिक्षा को आगे ले जाने का अपना वादा फिर से दोहरा रहे हैं। ज्ञान और शिक्षा हर औरत, हर बेटी तक पहुंचे। कोई भी लड़की ज्ञान और शिक्षा की रोशनी के बिना न रहे यह हमारा सपना है। 'सबला' इस सपने को पूरा करने की कोशिश जारी रखेगी।

शुरू से ही हर समाज ने औरतों को औपचारिक, स्कूली या आश्रमों की शिक्षा से वंचित रखा है। ज्ञान या इल्म पाना, इकट्ठा करना, नया ज्ञान बनाना, ज्ञान को औरों तक पहुंचाना सिर्फ मर्दों का काम और अधिकार रहा है। कुछ इक्की-दुक्की औरतों ने ज़रूर अपनी हिम्मत से या किसी और की मदद से ज्ञान पाया है। इतिहास में उनके नाम हैं पर वो इक्की-दुक्की ही थीं। पंडित, विद्वान, दर्शन शास्त्री, धर्म शास्त्री सब पुरुष ही रहे।

कुछ धर्मों और समाजों में औरतों पर बन्धन थे। वो चाहते हुए भी शिक्षा नहीं पा सकती थीं। कहते हैं हिन्दू समाज में स्त्रियों और शूद्रों को वेद सुनने का भी अधिकार नहीं था। लिखने पढ़ने की बात अलग रही, वे वेद सुन भी नहीं सकते थे। संपन्न जाति के पुरुष नहीं चाहते थे कि औरतें और शूद्र ज्ञान पा कर अपने शोषण के खिलाफ़ आवाज़ उठाएं। इसीलिए स्त्रियों और शूद्रों को पंडित बनने का भी अधिकार नहीं है। यह भी एक बड़ा कारण है औरतों और शूद्रों के पिछड़े होने का। आज भी हिन्दुस्तान में सिर्फ़ 39 प्रतिशत औरतें साक्षर हैं। लड़कों की तुलना में कम लड़कियां स्कूल भेजी जाती हैं। लड़कों से ज़्यादा लड़कियां बीच में ही पढ़ाई छोड़ देती हैं। यही वजह है कि औरतें और पिछड़ी जाति के लोग हर तरह से 'पिछड़े' रहते हैं।

हम लोग औरतों के जायदाद के अधिकारों की बात करते हैं, वोट के अधिकारों की बात करते हैं, लेकिन ज्ञान पाने और ज्ञान उपजाने का जो सबसे ज़रूरी अधिकार उसकी अधिक बात नहीं करते। विनोबा भावे ने बार-बार हमारा ध्यान इस अधिकार की ओर खींचा था। अपनी पुस्तक "स्त्री-शक्ति" में विनोबा लिखते हैं—"स्त्रियों को हिन्दू धर्म ने सन्यास और ब्रह्मचर्य का अधिकार नहीं दिया है। यह जो आध्यात्मिक अपात्रता है, उससे स्त्रियों में स्थायी हीन भावना आ गई है।"

धार्मिक और सामाजिक क़ानून तभी बदलेंगे जब स्त्रियां पंडित बनेंगी, ज्ञानी बनेंगी, पुराने धर्मों और क़ानूनों की व्याख्या करेंगी। उन धर्मों और क़ानूनों में जो ग़ैर-बराबरी है उसे दूर करेंगी और ऐसे क़ानूनों और धर्मों की रचना करेंगी जिनमें स्त्री-पुरुष, हर जाति, हर संप्रदाय के लोगों को बराबर के हक़ होंगे। ऐसी विद्वान औरतें तभी आगे आएंगी जब ज़्यादा से ज़्यादा औरतें साक्षर होंगी। जब हर घर में विदुषियां होंगी, जब पूरे समाज में स्त्री शिक्षा का माहौल बनेगा। लाखों, करोड़ों पढ़ी-लिखी औरतों में से निकलेंगी क़ानून शास्त्री, धर्म शास्त्री, अर्थ शास्त्री, समाज शास्त्री।

आज के हमारे शास्त्र, हमारे इतिहास, हमारा पूरा का पूरा ज्ञान अधूरा है क्योंकि उस में स्त्रियों और मज़दूर वर्ग की भागीदारी नहीं है। उनके विचार नहीं हैं, उनके अनुभव नहीं हैं। एक छोटे से वर्ग द्वारा लिखे शास्त्र भला कैसे 'संपूर्ण' हो सकते हैं, वो कैसे पूरे समाज को आगे ले जा सकते हैं?

विनोबा भावे कहते हैं कि स्त्रियां ज्ञान साधना करेंगी तभी पार पड़ेगी, तभी स्त्री-जाति का उद्धार होगा। उनके अनुसार "स्त्रियों को खूब ज्ञानाभ्यास करना चाहिए। ज्ञान की छोटी-सी पूंजी पर स्त्री तेजस्वी नहीं बन सकती है और पुरुष प्रधान समाज में स्वतंत्र हो कर काम करने की शक्ति उसमें नहीं आ सकती। सरस्वती जैसी ज्ञान में अग्रसर स्त्रियां होनी चाहिए। पुरुषों को कम ज्ञान हो तो चलता है, परन्तु स्त्रियों को बहुत से काम करने हैं, इसीलिए उन्हें पूरा ज्ञान होना चाहिए।"

हम विनोबा जी की बात से पूरी तरह सहमत हैं। हर पिछड़े वर्ग को शिक्षा की ज़्यादा ज़रूरत है। पिछले पचास-साठ सालों में कुछ महिलाएं हर क्षेत्र में आगे आई हैं। आज औरतें अर्थ शास्त्री, धर्म शास्त्री, क़ानून शास्त्री, डाक्टर हैं। इन्हीं में से कई औरतों ने इन शास्त्रों की नारीवादी नज़रिए से व्याख्या की है। इन्हीं की बदौलत हमें मालूम पड़ा है कि कहां और कैसे औरतों के साथ अन्याय हो रहा है। इन्होंने ही हमें बताया है, आंकड़े दे दे कर समझाया है कि औरतें खेतों-खलिहानों में कितना काम करती हैं, घर चलाने में, बच्चे पालने में कितना योगदान करती हैं। बिना पढ़ी-लिखी औरतों के ये सब बातें हम तक नहीं पहुंच पातीं। इस दौर को हम सब ने मिल कर आगे ले जाना है।

हमें इस बात की भी खुशी है कि आज हमारे देश में जो साक्षरता अभियान चल रहा है उसमें भी औरतें मर्दों के साथ कंधे से कंधा मिला कर आगे चल रही हैं। चार करोड़ नव-साक्षरों और चालीस लाख साक्षरता शिक्षकों में दो-तिहाई औरतें हैं। इस अभियान को, इस ज्ञान की ज्योति को हमें अभी और बहुत आगे ले जाना है।

आठ मार्च 1993 से देश के आठ राज्यों में **समता—शिक्षा और समानता के लिये ज्ञान-विज्ञान जाथा**—शुरू हो रही है। हम 'सबला' की तरफ से समता जाथा का अभिनंदन करते हैं। 'सबला' अपने पूरे बल से इस जाथा का साथ देगी। हमें पूरा भरोसा है कि 'सबला' के सभी पाठक भी समता जाथा में मदद करेंगे। इस अंक में हम समता जाथा के बारे में विस्तार से जानकारी दे रहे हैं। 1993 में स्त्री शक्ति जगे, स्त्री साक्षरता और ज्ञान बढ़े, यही हमारी मनोकामना है, यही हमारी शुभकामना है।

—कमला भसीन